DSSSB PRT, TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR With ANKIT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

LIVE 18-05-2024 09:00 AM

1. अंतर के पट खोलना - विवेक से काम लेना
2. अंगूठी का नग होना - बहुत कीमती होना।
3. समुद्र मंथन करना - कठोर परिश्रम करना
4. तीर मारना - बड़ा काम करना
5. एंड़ी चोटी का जोर लगाना - बहुत परिश्रम करना
6. लुटिया डूब जाना - पूर्णत: हार जाना
7. छक्के छुड़ाना - पराजित करना / बुरी तरह हराना

8. पौ बारह होना - लाभ ही लाभ होना

9. जौहर खुलना - भेद का पता लगना

10. ढपोर शंख - बेवकूफ

11. नौ-दो ग्यारह होना - भाग जाना

12. ऐसी-तैसी करना - दुर्दशा करना

13. तिलांजलि दे दी - पूर्णतः मुक्त होना

14. सिर आँखों पर बिठाना - हृदय से सेवा सत्कार

15. आकाश से बातें करना - बहुत ऊँचा होना

16. बाँसों उछलना - प्रसन्न होना

17. भाड़ झोंकना - व्यर्थ समय नष्ट करना

18. लंगोटी में फाग - दरिद्रता में आनन्द मनाना

19. खून पानी होना - कोई असर न होना

20. माथा ठनकना - अनिष्ट की आशंका होना

21. ठीकरा फोड़ना - किसी के सिर झूठा दोष लगाना

22. दाँतों तले उँगली दबाना - हैरान होना

23. अंधेरी नगरी - अन्याय की जगह

24. अँगूठा दिखाना - इंकार करना

25. ईमान बेचना - अपने कर्त्तव्य से हट जाना

26. माँगे भीख पूछे गाँव की जमा - अपनी असलियत भूलकर बात करना

27. अपनी ढपली अपना राग - सबका अपने अपने मन के अनुसार चलना

28. हँसुए के ब्याह में खुरपी का गीत - असंगत बातें करना

29. जाके पाँव न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई - जिसके ऊपर बीतती है वही जानता है।

30. जस दूल्हा तस बनी बरात - सभी साथी एक ही जैसे

31. ऊँट के मुँह में जीरा - आवश्यकता से बहुत कम

32. सावन के अंधे को हरा ही हरा नजर आता है - सुखी को सब जगह सुख ही सुख दिखाई पड़ता है।

33. कर भला तो हो भला - सेवा करने वाले को अच्छा फल मिलता है।

34. घर का भेदी लंका ढाए - आपस की फूट से हानि होती है।

35. नाच न जाने आँगन टेढ़ा - खुद तो ज्ञान नहीं रखना और दूसरों को दोष देना

36. अधजल गगरी छलकत जाए - थोड़ी विद्या या धन, बल होने पर इतराना

37. तबेली की बला बन्दर के सिर - किसी का अपराध दूसरे के लिए

38. कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है - अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है

39. गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी - उपकार करने के बदले स्वयं को दुख भोगना पड़ा

40. गंगा गये गंगादास जमुना गये जमुनादास - जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता

41. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली - आकाश-पाताल का अन्तर होना

42. टूट चाप नहिं जुरै रिसाने - नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है।

43. अंधा पावै आँखें तो पतिपाय - अभिष्ट की प्राप्ति होने पर विश्वास जमना

44. जादू वही जो सिर पर चढ़कर बोले - कार्य वही श्रेष्ठ है जिसका लोहा विरोधी को भी मानना पड़े।

45. राम नाम जपना, पराया माल, अपना - धोखे से धन जमा करना

46. घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध - घर के ज्ञानी को सम्मान नही

47. कोयले की दलाली में मुँह काला - बुरे काम से बुराई मिलना

48. हथेली पर सरसों नहीं जमती - काम इतनी जल्दी से नही हो जाता

49. रस्सी का साँप बनाना - बात का बतंगड़ बनाना

50. रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई - सर्वनाश हो गया पर ऐंठन नही गई

51. राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी - बराबर का मेल हो जाना

52. लंका में सब बावन गज के - एक से बढ़कर एक

53. लातों के भूत बातों से नहीं मानते - दुष्ट लोगों से कढ़ाई से पेश आना पड़ता है

54. लाल गुदड़ी में नहीं छिपते - उत्तम प्रकृति के लोगों का पता चल ही जाता है

55. लेना एक न देना दो - किसी से कुछ मतलब न रखना

56. शक्ल चुड़ैल की, मिजाज परियों का - बेकार का नखरा

57. सखी न सहेली भली अकेली - अकेला रहना अच्छा होता है

58. साँच को आँच नहीं - सच्चे आदमी को कोई खतरा नही होता

59. साँप मरे न लाठी टूटे - बिना बल प्रयोग के काम हो जाए।

60. सावन हरे न भादों सूखे - सदा एक-सी दशा

61. सिर मुँडाते ही ओले पड़ना - शुरु में ही विघ्न पड़ना

62. सौ दिन चोर के, एक दिन साह का - सौ अपराध करे पर एक दिन फंस ही जायेगा

63. सौ सुनार की एक लोहार की - निर्बल के मुकाबले बलवान का प्रभाव अधिक

64. हथेली पर सरसों नहीं जमती - कठिन काम इतनी जल्दी नही हो जाता

65. अंगूठा दिखाना - इनकार करना

66. अंधे की लकड़ी - एक मात्र सहारा

67. अंधे के आगे रोना - व्यर्थ प्रत्यन्न करना

68. अंधे के हाथ बटेर लगना - अनायास ही मिलना

69. अक्ल का अंधा / अक्ल का दुश्मन - महामूर्ख होना

70. आँख मूँदना - मर जाना / अनदेखी करना

71. आकाश पाताल एक करना - कठिन परिश्रम करना

72. उँगली पर नचाना - वश में रखना

73. उड़ती चिड़िया पहचानना - दूरदर्शी होना

74. ऊधो का न लेना न माधो का देना - किसी से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखना

75. एक ढेले से दो शिकार - एक कार्य से दो उद्देश्यों की पूर्ति करना

76. ओले पड़ना - विपत्ति आना

77. कूपमण्डूक होना - सीमित ज्ञान

78. काँटा दूर होना - बाधा दूर होना

79. कालिख पोतना - बदनामी करना

80. कंगाली में आटा गीला होना - अभाव में और अभाव होना

81. गागर में सागर भरना - थोड़े में बहुत कुछ कहना

82. चोली दामन का साथ - अत्यन्त निकटता

83. चिराग तले अंधेरा - अपना दोष स्वयं दिखाई नहीं देता

84. चोर की दाढ़ी में तिनका - अपराधी सदैव शंकाग्रस्त रहता है।